

UPSC-CSE 2027/28

DAILY CURRENT AFFAIRS

 **ONE STOP SOLUTION**

By **Faiyaz Sir**



**17
OCTOBER**



**COMPLETE
COVERAGE**



**EXAM
FOCUSED**



**ANALYSIS
MADE EASY**



**STATIC + CURRENT
INTEGRATION**



**STAY AHEAD
STAY PREPARED**



Study
Today

Better
Tomorrow
😊

BIG
DREAMS
BIG
ACTIONS

मुश्किलें छोटी पड़ जाती हैं,
जब हौसला बड़ा हो।

UPSC

IAS

PCS

Dream
Plan
Achieve

आज क्या पढ़ेंगे?

- **National water Ways**
- **LFPR - Women**
- **China – Ban on Export**
- **Ladakh**
- **Student Protest**
- **CERT-in**
- **INS – Samarthak**
- **India's Crude Oil Import**
- **Tigray Conflict**
- **USA-Canada-Alberta**
- **Iran – Nuclear Power**
- **EU Summit**
- **SA – LED Coalition – Houthis**
- **E-Governance Summit**



पत्र सूचना कार्यालय

सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार



हमारे बारे में



प्रेस विज्ञप्ति



गैलरी



अनुसंधान इकाई



मीडिया सुविधाएं



आर्काइव



तथ्यों की जांच



होम / सभी विश्लेषक / **Explainer Details**



Infrastructure

भारत के जलमार्गों का विकास: एक सुरक्षित और बेहतर जलमार्ग नेटवर्क का निर्माण

Posted On: 16 OCT 2026 12:05PM

भारत में जलमार्गों पर यातायात बढ़ने के साथ-साथ सुरक्षित और बेहतर अंतर्देशीय नौवहन व्यवस्था विकसित की जा रही है। जल सर्वेक्षण और नौवहन मार्गों के रखरखाव से जलमार्गों को नौकाओं और जहाजों के आवागमन के योग्य बनाए रखा जाता है। वहीं, ब्रह्मपुत्र नदी पर भारत के पहले नदी-आधारित प्रकाशस्तंभ चौबीसों घंटे नौवहन के लिए दूर तक सहायता उपलब्ध कराते हैं। डिजिटल मंचों के माध्यम से जल की गहराई, मार्ग और मौसम की वास्तविक समय की जानकारी मिलती है। इन सभी पहलों से नौवहन सुरक्षा मजबूत हो रही है, आवागमन अधिक सुगम और पूर्वानुमान योग्य बन रहा है तथा भारत के जलमार्गों पर बढ़ते माल परिवहन को सहायता मिल रही है।



जलमार्गों के विस्तार के साथ नौवहन को सुदृढ़ बनाना

- भारत की नदियां और जलमार्ग देश के परिवहन नेटवर्क में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन्हें अर्थव्यवस्था को गति देने वाले एक प्रभावी साधन के रूप में विकसित किया जा रहा है। ये परिवहन का किफायती और स्वच्छ विकल्प उपलब्ध कराते हैं। जलमार्ग से एक टन माल ढोने की लागत सड़क परिवहन की तुलना में लगभग एक-तिहाई और रेल परिवहन की तुलना में आधी होती है। इससे कार्बन उत्सर्जन भी बहुत कम होता है। इससे राजमार्गों पर दबाव कम होता है और उनका उपयोग यात्रियों तथा ऐसे सामान के परिवहन के लिए किया जा सकता है, जिन्हें कम समय में पहुंचाना आवश्यक होता है।
- देश में नौवहन और जल परिवहन को बढ़ावा देने के लिए **111 राष्ट्रीय जलमार्ग** हैं। इन जलमार्गों की कुल लंबाई **20,187 किलोमीटर** है और ये **23 राज्यों तथा 4 केंद्रशासित प्रदेशों** में फैले हुए हैं। इनमें से **32 राष्ट्रीय जलमार्गों** पर वर्तमान में परिचालन हो रहा है। जलमार्गों का बढ़ता आर्थिक महत्व इनके माध्यम से माल ढुलाई में तेजी से हो रही वृद्धि से स्पष्ट होता है। अंतर्देशीय जलमार्गों से माल ढुलाई वर्ष **2014-15 के 2.9 करोड़ मीट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2025-26 में 21.8 करोड़ मीट्रिक टन** हो गई। यह **20.13 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर)** को दर्शाता है। यह वृद्धि **समुद्री भारत दृष्टिकोण 2030** के तहत निर्धारित **20 करोड़ मीट्रिक टन** के लक्ष्य को भी पार कर चुकी है। इस प्रकार, अंतर्देशीय जलमार्ग अब केवल संभावनाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि बेहतर प्रदर्शन भी कर रहे हैं।



जल सर्वेक्षण

- जल सर्वेक्षण के अंतर्गत जल निकायों और उनकी भौतिक विशेषताओं का मापन और विवरण तैयार किया जाता है। इसमें नदी या जल निकाय की तली की संरचना, पानी की गहराई, बहाव की दिशा और संभावित खतरों का पता लगाना शामिल है। इसका उद्देश्य नौवहन के साथ-साथ समुद्र में होने वाले कार्यों, वैज्ञानिक अनुसंधान, पर्यावरण संरक्षण और पूर्वानुमान सेवाओं जैसी अन्य गतिविधियों में सहायता करना है। जल सर्वेक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य नौवहन संबंधी चार्ट और मानचित्र तैयार करना है, जिनसे सर्वेक्षण किए गए क्षेत्र की स्पष्ट, व्यापक और अद्यतन जानकारी मिल सके।

- **भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण** राष्ट्रीय जलमार्गों पर जल सर्वेक्षण करता है। इन सर्वेक्षणों के तहत नदी की गहराई, तल की बनावट, रेत के **उथले टीले**, **जल प्रवाह** की विशेषताओं और नौवहन को प्रभावित करने वाले नदी के स्वरूप में होने वाले बदलावों का मापन और विश्लेषण किया जाता है। इनमें **थालवेग सर्वेक्षण** भी शामिल हैं, जिनके माध्यम से नदी के किसी हिस्से में नौवहन के लिए उपलब्ध सबसे गहरे मार्ग की पहचान की जाती है और उस पर नजर रखी जाती है। टर्मिनल और जेटी सर्वेक्षणों के तहत **टर्मिनलों और जेटियों** के आसपास पानी की गहराई तथा वहां तक पहुंचने की स्थितियों का आकलन किया जाता है। लगातार किए जाने वाले जल सर्वेक्षण से नौवहन मार्ग (फेयरवे) के विकास, नदी तल से गाद और अन्य सामग्री हटाने की योजनाएं बनाने, नौवहन सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा देशभर में अंतर्देशीय जल परिवहन (आईडब्ल्यूटी) के बुनियादी ढांचे के विकास से जुड़े निर्णय लेने में मदद मिलती है।
- नदी की स्थिति कुछ हिस्सों में तेजी से बदल सकती है। इसलिए सर्वेक्षण कितनी बार किया जाएगा, यह प्रत्येक जलमार्ग की आवश्यकता के अनुसार तय किया जाता है। **सितंबर 2026 तक, 22 राष्ट्रीय जलमार्गों** पर नियमित थालवेग सर्वेक्षण किए जा रहे थे। संबंधित जलमार्ग की आवश्यकता के अनुसार ये सर्वेक्षण साप्ताहिक, हर पखवाड़े या मासिक आधार पर किए जाते हैं। इस निगरानी व्यवस्था में भारत-बांग्लादेश प्रोटोकॉल मार्ग का भारतीय हिस्सा भी शामिल था। यह अंतर्देशीय जल पारगमन नेटवर्क है, जो निर्धारित नदी मार्गों के माध्यम से भारत और बांग्लादेश के बीच माल की आवाजाही संभव बनाता है।

न्यूनतम उपलब्ध गहराई: नौवहन का एक महत्वपूर्ण मापदंड

- जल सर्वेक्षण के सबसे महत्वपूर्ण परिणामों में से एक **न्यूनतम उपलब्ध गहराई (एलएडी)** है। इससे आशय नौवहन मार्ग में उपलब्ध पानी की न्यूनतम गहराई से है। इसका आकलन किसी विशेष हिस्से और निश्चित अवधि के लिए किया जाता है। न्यूनतम उपलब्ध गहराई का जहाजों के संचालन और नौवहन की योजना पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यह जहाज के लिए अनुमत अधिकतम ड्राफ्ट यानी पानी में जहाज के डूबे हुए हिस्से की गहराई निर्धारित करती है और माल ढोने की क्षमता को प्रभावित करती है। इससे मार्ग और समय-सारणी तय करने तथा मौसम के अनुसार नौवहन संबंधी निर्णय लेने में भी मदद मिलती है।

नौवहन सहायक प्रणालियां: जहाजों को सुरक्षित मार्ग दिखाना

- सुरक्षित नौवहन के लिए ऐसी विश्वसनीय प्रणालियों की आवश्यकता होती है, जो जहाजों को मार्गों, खतरों और बदलती परिस्थितियों की पहचान करने में मदद करती हैं। समुद्री नौवहन सहायक अधिनियम, 2021 के तहत इन प्रणालियों को औपचारिक रूप से **नौवहन सहायक प्रणालियों (एटीओएन)** के रूप में मान्यता दी गई है।
- नौवहन सहायक प्रणाली (एटीओएन) ऐसा उपकरण, व्यवस्था या सेवा है, जो जहाजों से अलग होती है और जिसे जहाजों तथा जहाजों के यातायात के सुरक्षित और कुशल नौवहन को बढ़ावा देने के लिए तैयार किया जाता है और संचालित किया जाता है। इनमें प्रकाशयुक्त तैरते संकेतक, रडार संकेतक, प्रकाश स्तंभ, नौवहन मार्ग के संकेतक, प्रकाशस्तंभ, प्रकाशयुक्त पोत आदि शामिल हैं।

- **बोय (तैरते संकेतक)**— ये ऐसे तैरते हुए पिंड होते हैं, जिन्हें किसी निश्चित स्थान पर बांधकर रखा जाता है। इनका उपयोग नाविकों को मार्ग दिखाने या खतरे के प्रति सचेत करने, पानी में डूबी वस्तुओं के स्थान को चिह्नित करने अथवा लंगर डालने के बजाय जहाजों को बांधकर रखने के लिए किया जाता है। बोय के प्रकारों में पार्श्व संकेतक, दिशासूचक संकेतक, अलग-अलग खतरे के संकेतक, सुरक्षित जल क्षेत्र के संकेतक, विशेष संकेतक और आपातकालीन मलबा-चिह्नांकन बोय शामिल हैं।



- **रडार संकेतक (रेकॉन)**— यह एक अत्यधिक संवेदनशील, एकल उपकरण है, जिसका उपयोग बंदरगाह और पत्तन प्राधिकरण नाविकों को स्थिर या तैरती हुई नौवहन सहायक प्रणालियों की स्थिति आसानी से पहचानने में मदद करने के लिए करते हैं। यह उपकरण लगभग हर तरह के मौसम में संकेत प्रसारित करता है। कोहरे, खराब मौसम या समुद्र की प्रतिकूल परिस्थितियों का भी इस पर असर नहीं पड़ता।



1. प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न (Prelims Questions)

भारत में अंतर्देशीय जलमार्ग (Inland Waterways) विकास और सुरक्षा के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत के पहले नदी-आधारित प्रकाशस्तंभ (River-based Lighthouse) का निर्माण ब्रह्मपुत्र नदी पर किया गया है ताकि चौबीसों घंटे नौवहन सहायता दी जा सके।
2. भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) की स्थापना अंतर्देशीय जलमार्गों के नियमन और विकास के लिए एक सांविधिक निकाय (Statutory Body) के रूप में की गई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (A) केवल 1
- (B) केवल 2
- (C) 1 और 2 दोनों
- (D) न तो 1 और न ही 2

मुख्य परीक्षा प्रश्न (Mains Questions)

- "सुरक्षित और आधुनिक अंतर्देशीय जलमार्ग नेटवर्क भारत में माल परिवहन (Freight Logistics) की लागत को कम करने और सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।" PIB रिपोर्ट के आलोक में, भारत में अंतर्देशीय जलमार्गों की सुरक्षा और दक्षता बढ़ाने के लिए किए जा रहे हालिया पहलों की समीक्षा कीजिए तथा इसके समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियों का उल्लेख कीजिए।



पत्र सूचना कार्यालय

सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार



हमारे बारे में

प्रेस विज्ञप्ति

गैलरी

अनुसंधान इकाई

मीडिया सुविधाएं

आर्काइव

तथ्यों की जांच

होम / सभी विश्लेषक / Explainer Details



Economy

महिलाएँ, कार्य और उद्यम: बेहतर आजीविका के लिए भारत का प्रयास

Posted On: 15 OCT 2026 12:11PM

भारत में महिलाओं के रोजगार की कहानी अब भागीदारी से आगे बढ़ते हुए बेहतर गुणवत्ता वाले रोजगार की ओर बढ़ रही है। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (एलएफपीआर) के अनुसार, महिलाओं की श्रमबल भागीदारी दर (एलएफपीआर) 2017-18 में 23.3 प्रतिशत से बढ़कर 2025 में 40 प्रतिशत हो गई, जबकि श्रमिक जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) 22 प्रतिशत से बढ़कर 38.8 प्रतिशत हो गया। इस सुधार को आगे बढ़ाते हुए, नीतिगत सहायता के माध्यम से महिलाओं के रोजगार को औपचारिक उद्यम के रूप में मान्यता, ऋण, बाजार तक पहुँच, सुरक्षित कार्यस्थल, कौशल विकास और आजीविका के नए अवसरों के जरिए सशक्त बनाया जा रहा है। अब ध्यान इस बात पर है कि बढ़ती भागीदारी को अधिक आय, आर्थिक सुरक्षा और विकास में बेहतर योगदान में कैसे बदला जाए।



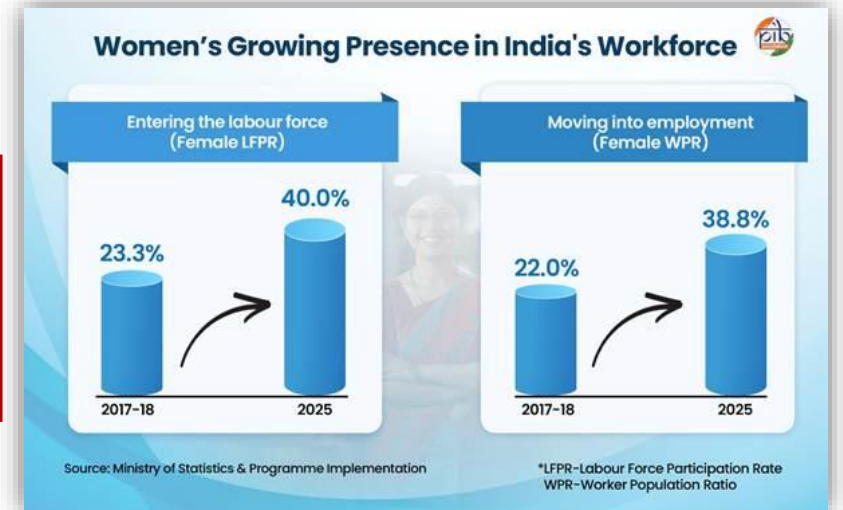
महिलाओं के रोजगार में वृद्धि और आर्थिक अवसरों का विस्तार

- भारत में महिलाओं का रोजगार अब केवल कार्यबल में उनकी उपस्थिति तक सीमित नहीं रह गया है। **श्रमबल भागीदारी में वृद्धि एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देती है**, साथ ही रोजगार के स्वरूप और गुणवत्ता पर भी अधिक ध्यान दिया जा रहा है। **जैसे-जैसे अधिक महिलाएँ श्रमबल में शामिल हो रही हैं, प्रगति का अगला आयाम उन अवसरों में निहित है, जो रोजगार के माध्यम से सृजित होते हैं।** आर्थिक सशक्तीकरण तब और मजबूत होता है, जब रोजगार से आय और सुरक्षा प्राप्त होती है, पहचान मिलती है तथा आर्थिक निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता हासिल होती है।
- इस व्यापक बदलाव को ऐसी नीतियों के माध्यम से समर्थन दिया जा रहा है, जो महिलाओं के लिए **सुरक्षित कार्यस्थलों, सामाजिक सुरक्षा, उद्यमिता, औपचारिकरण और वित्तीय अवसरों तक पहुँच का विस्तार करती हैं।** ये उपाय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी की गुणवत्ता को बेहतर बनाने और उसे सुरक्षित एवं सशक्त बनाने वाले अवसरों में बदलने में मदद करते हैं।

- **श्रमबल भागीदारी दर (LFPR)** से तात्पर्य जनसंख्या के उस अनुपात से है, जो या तो कार्यरत है अथवा काम की तलाश में है या काम करने के लिए उपलब्ध है।
- **श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR)** से तात्पर्य जनसंख्या में नियोजित व्यक्तियों के अनुपात से है।

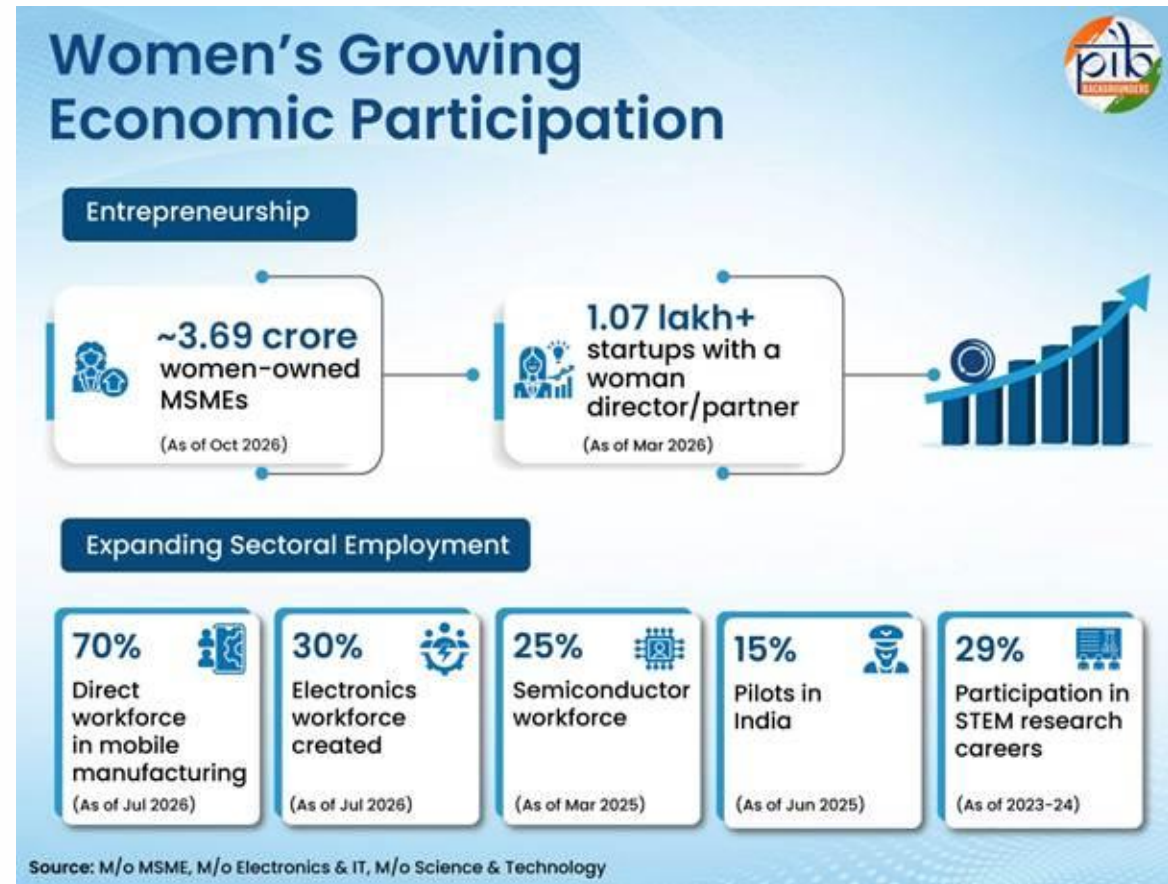
मात्रात्मक बदलाव: कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि

- हाल के वर्षों में भारत के श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की महिलाओं के लिए **श्रमबल भागीदारी दर (एलएफपीआर) 2017-18 में 23.3 प्रतिशत से बढ़कर 2025 में 40.0 प्रतिशत हो गई।**
- इस वृद्धि के साथ वास्तव में काम करने वाली महिलाओं की हिस्सेदारी में भी बढ़ोतरी हुई है। महिलाओं का **श्रमिक जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) 2017-18 में 22.0 प्रतिशत से बढ़कर 2025 में 38.8 प्रतिशत हो गया।** एक अनुमान के अनुसार, **2025 के दौरान भारत में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की लगभग 20 करोड़ महिलाएँ रोजगार में थीं।**



उद्यम में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति

- महिलाओं की बढ़ती संख्या उद्यमिता को अपना रही है और अपने स्वयं के व्यवसाय स्थापित कर रही है। महिला उद्यमिता आय अर्जित करने, परिसंपत्तियाँ बनाने और व्यवसायों का विस्तार करने के अवसर सृजित करके आर्थिक भागीदारी को व्यापक बनाती है। इससे वित्तीय आत्मनिर्भरता मजबूत होती है, साथ ही कौशल और संसाधनों तक पहुँच का भी विस्तार होता है।
- महिलाओं के स्वामित्व वाले सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई): अक्टूबर 2026 तक, लगभग 3.69 करोड़ पंजीकृत एमएसएमई महिलाओं के स्वामित्व वाले थे, जो कुल पंजीकरण का लगभग 38 प्रतिशत है।
- स्टार्टअप क्षेत्र में महिलाएँ: मार्च 2026 तक, 1.07 लाख से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स में कम-से-कम एक महिला निदेशक या भागीदार थी। ये सभी मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स का लगभग 48 प्रतिशत थे।



प्रौद्योगिकी और उच्च-कौशल वाले क्षेत्रों में महिलाएँ

- उद्यमिता के साथ-साथ विनिर्माण और उच्च-कौशल वाले क्षेत्रों में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है।
- मोबाइल फोन विनिर्माण: जुलाई 2026 तक, मोबाइल फोन विनिर्माण क्षेत्र के प्रत्यक्ष कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 70 प्रतिशत है। इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के व्यापक क्षेत्र में, पिछले दशक के दौरान सृजित कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 30 प्रतिशत है।
- सेमीकंडक्टर उद्योग: महिलाएँ सेमीकंडक्टर उद्योग में भी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। मार्च 2025 तक, वे इस उद्योग के कार्यबल का लगभग 25 प्रतिशत और भारत में चिप डिजाइन एवं इंजीनियरिंग कार्यबल का लगभग एक-चौथाई हिस्सा हैं।
- नागरिक उड्डयन क्षेत्र: इस क्षेत्र में भी विशिष्ट भूमिकाओं में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी दिखाई देती है। भारत में 15 प्रतिशत महिला पायलट हैं, जो वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक अनुपातों में से एक है। इसके अतिरिक्त, जून 2025 तक, वायु यातायात नियंत्रकों में 15 प्रतिशत, उड़ान प्रेषकों (फ्लाइट डिस्पैचर्स) में 11 प्रतिशत और नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) में उड़ान संचालन निरीक्षकों में 33 प्रतिशत महिलाएँ थीं।
- अनुसंधान एवं विकास: भारत के अनुसंधान तंत्र में भी महिलाओं की बढ़ती भागीदारी दिखाई देती है। अनुसंधान एवं विकास सांख्यिकी 2025-26 रिपोर्ट के अनुसार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) के अनुसंधान संबंधी करियर में महिलाओं की भागीदारी 2000-01 में 13 प्रतिशत से बढ़कर 2020-21 में 18.6 प्रतिशत और 2023-24 में 29 प्रतिशत हो गई।

औपचारिकरण: महिलाओं के कार्य को आर्थिक पहचान प्रदान करना

- **क) स्वावलंबिनी योजना (2025):** यह योजना युवा महिलाओं को उद्यमिता संबंधी प्रशिक्षण, वित्तीय एवं बाजार मार्गदर्शन और कानूनी सहायता के माध्यम से व्यावसायिक विचार विकसित करने से लेकर उद्यम स्थापित करने तक सहयोग प्रदान करती है। चयनित प्रतिभागियों को टिकाऊ उद्यम विकसित करने में सहायता के लिए 21 सप्ताह तक मार्गदर्शन और निरंतर सहयोग भी दिया जाता है।
- **ख) यशस्विनी अभियान (2024):** इस अभियान का उद्देश्य वर्ष 2029 तक उद्यम पंजीकरण पोर्टल और उद्यम असिस्ट प्लेटफॉर्म पर लैंगिक समानता हासिल करके उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना है। इसका एक अन्य उद्देश्य महिला-स्वामित्व वाले सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसई) के लिए निर्धारित 3 प्रतिशत सार्वजनिक खरीद लक्ष्य को बढ़ावा देना है।

महिला-नेतृत्व वाले एमएसएमई के लिए वित्तीय सहायता

- **क) प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई):** वर्ष 2015 में शुरू इस योजना का उद्देश्य गैर-कॉरपोरेट और गैर-कृषि क्षेत्र में आय अर्जित करने वाली गतिविधियों में संलग्न सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को 20 लाख रुपये तक का जमानत-मुक्त ऋण उपलब्ध कराकर ऋण तक उनकी पहुँच का विस्तार करना है।
- शुरुआत से लेकर अप्रैल 2026 तक, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) के अंतर्गत 57.79 करोड़ से अधिक ऋण स्वीकृत किए गए, जिनमें महिला उद्यमियों की हिस्सेदारी कुल स्वीकृत ऋणों का दो-तिहाई रही।
- **ख) सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों के लिए ऋण गारंटी योजना:** इस योजना की शुरुआत सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसई) को ऋण उपलब्ध कराने की व्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा उन उद्यमियों के लिए वित्त तक पहुँच बेहतर बनाने के उद्देश्य से की गई, जिन्हें पर्याप्त वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं या जिन तक इन सेवाओं की पहुँच सीमित है। इस योजना के अंतर्गत, महिला-नेतृत्व वाले एमएसई को 90 प्रतिशत का बढ़ा हुआ गारंटी कवरेज तथा गारंटी शुल्क में 10 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है।
- फरवरी 2026 तक (वित्त वर्ष 2000-01 से वित्त वर्ष 2025-26 तक), इस योजना के अंतर्गत महिला-स्वामित्व वाले MSEs के लिए लगभग 30.75 लाख ऋण गारंटियाँ स्वीकृत की गईं, जिनका कुल मूल्य लगभग 2.07 लाख करोड़ रुपये था।
- **ग) प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी):** पीएमईजीपी एक ऋण-संबद्ध सब्सिडी योजना है, जो गैर-कृषि क्षेत्र में नए सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना को सहायता प्रदान करती है। इसके अंतर्गत लाभार्थियों को बैंक ऋण के विरुद्ध मार्जिन मनी (सब्सिडी) के रूप में वित्तीय सहायता दी जाती है। इस योजना के तहत महिलाओं को शहरी क्षेत्रों में 25 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में 35 प्रतिशत सब्सिडी प्राप्त करने की पात्रता है।
- मई 2026 तक, पीएमईजीपी के अंतर्गत सहायता प्राप्त सभी सूक्ष्म उद्यमों में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 40 प्रतिशत थी। इसके अतिरिक्त, वितरित की गई कुल मार्जिन मनी सब्सिडी का लगभग 45 प्रतिशत महिलाओं को प्राप्त हुआ।

बाज़ार तक पहुंच: महिलाओं के कार्य को खरीदारों से जोड़ना

- **क) वोमनिया पहल:** वोमनिया, गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) की एक समावेशन-केन्द्रित पहल है, जो महिलाओं के स्वामित्व वाले सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसई) और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को सरकारी क्षेत्र के औपचारिक खरीदारों से जोड़ती है। एक समर्पित डिजिटल इंटरफेस के माध्यम से, ये उद्यम हथकरघा, जूट, काँयर (नारियल रेशा) और गृह-सज्जा से संबंधित उत्पादों को पंजीकृत कर सूचीबद्ध कर सकते हैं।
- **ख) खरीद एवं विपणन सहायता योजना (पीएमएस):** यह योजना पंजीकृत सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसई) को व्यापार मेलों, प्रदर्शनियों, विक्रेता विकास कार्यक्रमों, ई-कॉमर्स और पैकेजिंग सहायता के माध्यम से बाजार तक पहुंच बनाने में मदद करती है। महिलाओं के स्वामित्व वाले सूक्ष्म एवं लघु उद्यम व्यापार मेलों में निर्मित प्रदर्शनी स्थल के किराए पर 100 प्रतिशत सब्सिडी पाने के पात्र हैं।
- **ग) एमएसएमई व्यापार सक्षमता एवं विपणन (टीईएएम) पहल :** सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों (एमएसई) को डिजिटल विपणन तक पहुंच प्रदान करने के उद्देश्य से, रैंप कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2024 से 2027 तक तीन वर्षों के लिए टीईएएम पहल शुरू की गई। इसका उद्देश्य ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ओएनडीसी) के माध्यम से सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को नए बाजारों तक पहुंच बनाने, अपने ग्राहक आधार का विस्तार करने और आय बढ़ाने में सक्षम बनाना है।

1. प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न (Prelims Questions)

हाल ही में जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (Periodic Labour Force Survey - PLFS) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वर्ष 2017-18 की तुलना में वर्ष 2025 में भारत में महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR) में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।
2. श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR) किसी भी अर्थव्यवस्था में कार्यरत व्यक्तियों के कुल श्रम बल के अनुपात को मापता है।
3. आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) का आयोजन राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (A) केवल 1 और 2
- (B) केवल 1 और 3
- (C) केवल 2 और 3
- (D) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा प्रश्न (Mains Questions)

- "भारत में महिलाओं की श्रम बल भागीदारी (FLFPR) में वृद्धि का चरण अब केवल 'संख्यात्मक भागीदारी' से आगे बढ़कर 'गुणवत्तापूर्ण रोजगार' और 'उद्यमशीलता' की ओर स्थानान्तरित हो रहा है।" इस रुझान का विश्लेषण कीजिए और बताइए कि बढ़ती भागीदारी को उच्च आय, सामाजिक सुरक्षा और सतत आर्थिक विकास में बदलने के लिए क्या नीतिगत उपाय आवश्यक हैं?

China to curb exports of 40 cutting-edge technologies including AI, photovoltaics

Ananth Krishnan
BEIJING

China on Friday announced a sweeping draft plan to restrict exports of more than 40 cutting-edge technologies, including solar manufacturing technologies, AI models, and some biotech platforms.

A number of technologies related to the manufacture of solar cells have been listed for either a complete export ban or restricted exports. While the draft plan does not restrict most solar exports, new controls on next-generation solar manufacturing technologies could impact efforts by countries including India to reduce dependence on China as they look to move up the solar chain.

Several AI-driven technologies have also been listed in the draft plan, announced on Friday by the Ministry of Commerce and the Ministry of Science and Technology and titled "Announcement No. 48".

It covers 40 key technologies in the fields of AI, biomedicine and photovoltaics. Of these, 14 technologies were proposed for a complete prohibition of export, including perovskite and tandem solar-cell module manufacturing technologies, AI-driven technology that could be used to generate and mutate malicious code, and some platforms related to cell and gene therapy.

A further 26 technologies were listed for restricted exports, including polysilicon engineering technologies used to make solar cells, if they involve production lines with annual output capacities of at least 30,000 tonnes.

Potential delays

Indian manufacturers in the solar space may, going forward, be impacted, including by licensing delays, said Santosh Pai, Honorary Fellow, Institute of Chinese Studies (ICS) and a cross-

A new roadblock

The draft plan proposes export bans on 14 technologies and restrictions on 26 others

Solar: Perovskite and tandem-cell manufacturing know-how among the proposed bans; polysilicon production faces restrictions

AI, biotech: Select AI systems and cell- and gene-therapy platforms also targeted

India might face potential delays in solar investments, licensing and domestic manufacturing

border lawyer.

"The timetable for localisation is set to launch when domestic capacity from three independent domestic manufacturers exceeds 15 GW. This initial set of domestic manufacturers might experience delays in commencing production due to Announcement 48," he said.

In March, India amended restrictions on Chinese investment imposed in 2020, and listed polysilicon and ingot-wafer segments as priority sectors for fast-track approvals.

These "might not receive traction since Chinese firms will face constraints in undertaking solo investments in India, or joint ventures and licensing deals with Indian counterparts on account of Announcement No. 48," Mr. Pai noted.

A spokesperson for China's Ministry of Commerce said in a statement that "in recent years, AI, biomedicine and photovoltaic technologies have seen expanding applications in sensitive fields."

"Major economies around the world have implemented varying degrees of export controls in these areas. Drawing on international practice, China is implementing necessary controls in accordance with the law to prevent risks arising from loss of

control over technologies or inappropriate proliferation...," the statement said.

The statement said China was adding 12 photovoltaic technologies covering polysilicon production, wafer manufacturing and solar-cell manufacturing.

Chinese interests

Citing the need to "safeguard national security and interests", it said, "photovoltaic technologies are increasingly being used in aerospace, defence, unmanned systems and other sensitive sectors; as a result, the national-security implications of technology exports have increased."

On the proposed AI controls, the spokesperson said that while "most AI technologies will continue to be freely exportable", China was adding 23 key AI technologies covering foundation models, intelligent agents, computing clusters and information-processing technologies.

"Technologies such as autonomous malicious-code generation and mutation could be used to target critical infrastructure, defence systems and core government networks or to evade national security defences," the statement said.

"If such technologies were acquired by malicious actors, they could threaten national security and broader human security. China's objective is to establish security safeguards, prevent misuse and ensure that AI remains under human control."

The statement added that China remained "committed to building an open-source AI innovation ecosystem", and open-source AI projects and overseas chip fabrication activities "would be eligible for facilitation measures" while technologies already in the public domain through open-source publication or academic papers would "generally be exempt from export controls".

Ladakh groups reject govt. proposal, term it a 'departure' from assurances

Peerzada Ashiq

SRINAGAR

The Centre-Ladakh talks hit a deadlock on Friday as key civil society groups, the Leh Apex Body (LAB) and the Kargil Democratic Alliance (KDA), categorically rejected the fresh draft proposal of the Ministry of Home Affairs (MHA) shared on Thursday and described it as “a significant departure from the assurances and commitments made during previous meetings”.

“The LAB and KDA have thoroughly examined the draft proposal presented by the MHA during the sub-committee meeting held on October 15, 2026. Both bodies categorically reject the draft proposal in principle, as it represents a significant departure from the assurances and commitments made during previous meetings of the sub-committee,” the groups said in a joint state-



Civil society group leaders Chering Dorjay Lakrook and Sonam Wangchuk had met MHA officials on October 15 in Leh. FILE PHOTO

ment. The bodies urged the Ministry to reconsider the proposal and accept the draft Memorandum of Understanding (MoU) they had submitted in its true spirit and entirety.

“The draft MoU reflects the genuine aspirations of the people of Ladakh and the demands that LAB and KDA have consistently advocated since 2021,” they said. Another round of talks is likely to be held in

New Delhi on October 22.

Members of the Ministry’s High-Powered Sub-Committee met with the groups and local leaders in Leh on Thursday and shared a 15-page draft roadmap to address the region’s concerns.

‘Demands not met’

The civil society groups, after studying the fresh draft, said it “fails to address the demand for a legislative As-

sembly and constitutional safeguards under Article 371, including a provision tailored to Ladakh’s unique circumstances”.

“Instead, it proposes a North-East Frontier Agency-type arrangement that falls far short of the proposed UT with a legislature, which was the minimum guarantee from which a sui generis model could be developed as agreed upon in the meeting of 22 May 2026 and recorded in the Minutes of Meeting (MoM), which were signed and agreed on 3rd July pursuant to the meeting,” they said.

The groups said the proposed framework appears closer to a Territorial Council model, with substantial powers concentrated in the Lieutenant Governor’s administration, rather than ensuring the meaningful legislative, executive and constitutional safeguards sought by the people of Ladakh.

Cong. trying to seize power through anarchy: Rajnath

The Defence Minister says protests against ECI and CEC are aimed at 'creating unrest and instability in the country'. Congress is trying to avenge its political defeats at the cost of the nation, he adds

Mayank Kumar
LUCKNOW

Defence Minister Rajnath Singh on Friday accused the Congress and the INDIA bloc of trying to "capture power through regime change and anarchy" like Bangladesh.

"Congress and its allies are eyeing to capture power through regime change and anarchy, but India's democracy and constitutional institutions cannot be sacrificed at the altar of political interests. At Congress-backed press conferences, they openly claimed inspiration from Bangladesh for regime change and also publicly talked about bringing down the government," he said at a press conference on the protests against the Election Commission of India (ECI) and the special intensive revision (SIR) of electoral rolls.



Union Minister Rajnath Singh and U.P. BJP chief Pankaj Chaudhary at a press conference in Lucknow on Friday. SANDEEP SAXENA

"Their sole agenda is to create unrest and instability in the country. The frequent use of terms such as resistance (and) regime change makes it clear that the recent incidents in Delhi represent a condemnation attempt to derail India's development journey," he added.

Alleging that the Emergency, the 1984 anti-Sikh riots and the firing on Kar Sevaks in Ayodhya are the three most "unforgivable" acts associated with Congress's rule, the Defence Minister said, "Today, Congress is committing a

fourth unforgivable act by attacking the Constitution, constitutional values, and institutions."

Mr. Singh said Congress leader Rahul Gandhi's allegations of vote theft did not withstand scrutiny. "Con-

gress itself could not file even a single formal appeal against the electoral rolls. Congress has remained out of power in Bihar, Uttar Pradesh, Gujarat, West Bengal, Tamil Nadu, Goa, and other States for decades. Is this due to alleged vote theft or political underperformance?" he asked, and wondered whether Mr. Gandhi can retain his Rae Bareilly seat without the support of the Samajwadi Party.

"Before questioning the Election Commission, Congress should first answer concerns raised over the Commission's appointments and impartiality during its own tenure in government," he said.

The Defence Minister said the Congress is trying to avenge its political defeats at the cost of the nation. Any political party

Regime change happens through polls, seeking it is not wrong: Cong.

The Hindu Bureau
NEW DELHI

The Congress on Friday said regime change in India always happens through elections and seeking it is not wrong. It also said that the Opposition's job in a democracy is to "oppose, expose and depose".

The party's comments followed Defence Minister Rajnath Singh's allegation that Congress and its allies want a Bangladesh-like regime change in India by creating "anarchy through street protests".

Earlier, civil society activist Prashant Bhushan, along with BJP leader Abhijeet Dipke and AISA president Neha Bora, addressed the media and stated that the protesters wanted regime change.

"The Defence Minister needs to be reminded of what former President Pranab Mukherjee, who was awarded the Bharat Ratna in 2019, would often say: the job of the Opposition in a democracy is to oppose, expose and depose," Congress communication chief Jairam Ramesh said in a post on X.

Meanwhile, Pawan Kherra, who heads the Congress's publicity and media wing, said the Congress does not need to look at Bangladesh or Nepal as models.

"We have launched a campaign *vote chor, gaddi*

The Defence Minister needs to be reminded of what former President Pranab Mukherjee, who was awarded the Bharat Ratna in 2019, would often say: the job of the Opposition in a democracy is to oppose, expose and depose

JAIRAM RAMESH
Congress leader



Prashant Bhushan, Abhijeet Dipke and Neha Bora stated that protesters wanted regime change

expose and depose," Congress communication chief Jairam Ramesh said in a post on X.

Meanwhile, Pawan Kherra, who heads the Congress's publicity and media wing, said the Congress does not need to look at Bangladesh or Nepal as models.

"We have launched a campaign *vote chor, gaddi*

chorh (vote thief, vacate the seat). We have been saying that we want to defeat the government. So why is Rajnath ji behaving like *Jagga Jasoo* or Sherlock Holmes?" Mr. Kherra said, adding, "How does a regime change happen in a democracy like India? Through elections."

The Congress leader also played a 2013 video clip from Prime Minister Narendra Modi's election campaign in which Mr. Modi, then Chief Minister of Gujarat, talked about the "people of India getting restless to uproot the Congress government at the

Centre". Mr. Kherra said India has witnessed peaceful regime changes for a long time, but now the BJP gets uncomfortable with the democratic tradition. He dared the government to convene a special session of Parliament and change the Constitution to make "agitations unconstitutional".

"The same BJP was the cheerleader of the same lawyer, Prashant Bhushan, when he was protesting against our government in 2012-13. Even then his stated position was regime change. The fact of the matter is the BJP is not used to democracy when they are at the receiving end," he said.

"The RSS (Rashtriya Swayamsevak Sangh) has seized the system in such a way that it has its stamp everywhere, including universities, the Election Commission, bureaucracy, and so on. This is called a regime, which we are talking about changing and we will change it," Mr. Kherra added.

Farmers will march to Delhi against CEC on October 23: SKM

The Hindu Bureau
NEW DELHI

Various farmers' organisations, under the banner of Samyukt Kisan Morcha (SKM), will march to Delhi on October 23 demanding the resignation of Chief Election Commissioner (CEC) Gyanesh Kumar over the special intensive revision (SIR) of electoral rolls. Briefing reporters here on Friday, senior SKM leader and president of All India Kisan Sabha (AIKS) Ashok Dhawale said farmers would hold protests simultaneously at all district, taluk and block headquarters in support of the demand.

When asked about the ban on protests near Jantar Mantar, Mr. Dhawale said farmers were prepared for larger struggles. "This is going to be one of the largest struggles against SIR," he said, and added that farmers were not scared of

suppression. "Let them [the authorities] dare to do what they want to do," he said, and maintained that students, youth, women and civil society organisations and members of trade unions would also join the protests.

Mr. Dhawale and AIKS general secretary Vijoo Krishnan also released the logo of the 36th All India conference of the AIKS, which would be held at Nalgonda from November 15 to 18. They said Nalgonda was chosen as the venue for the conference as it was the epicentre of the historic Telangana armed peasants' struggle.

Mr. Dhawale said the SKM had decided to hold stronger protests from November 26 against the proposed trade deal with the United States, and the AIKS meeting would be a venue for uniting farmers' organisations against the attacks on farmers.

SC to list plea against Rahul for 'pushing' pregnant journalist

The Hindu Bureau
NEW DELHI

The Supreme Court on Friday agreed to list an application alleging that Congress leader Rahul Gandhi pushed a pregnant journalist during a march to the apex court on October 12.

Orally mentioning the application before Chief Justice of India Surya Kant, senior advocate Gaurav Bhatia said the woman journalist was manhandled on the court premises.

On October 12, Mr. Gandhi led a march to the Supreme Court, where he and a few Opposition bloc leaders went to the Registry as petitioners.

They sought an independent probe into allegations of arbitrary use of power by Chief Election Commissioner Gyanesh Kumar and demanded the suspension of the special intensive revision (SIR) process. The court premises

were teeming with lawyers and journalists, while Supreme Court security stopped a large crowd outside.

Mr. Bhatia submitted on Friday that the woman journalist was three months pregnant and had to be hospitalised.

The senior advocate had raised the same allegation against Mr. Gandhi in an apex court hearing held on Thursday. Mr. Bhatia represented a petition accusing the Congress leader of leading a "political procession" into the Supreme Court to "browbeat" the judiciary. The petition sought criminal contempt action against Mr. Gandhi and other Opposition leaders.

On Friday, the Chief Justice said the application about the alleged conduct of Mr. Gandhi towards the woman journalist may be heard either on October 26 or the next day.

Protesters seek CEC's resignation at 'Lehra Do Tiranga' in Mumbai

Yohan Varghese
MUMBAI

Demonstrators gathered at Azad Maidan on Friday under the banner of 'Lehra Do Tiranga', demanding the resignation of Chief Election Commissioner Gyanesh Kumar, the withdrawal of the special intensive revision (SIR) of electoral rolls and the release of activists detained in New Delhi.

Anol Asulkar, coordinator of Citizens for Peace and Justice (CPJ), said the demonstration was organised in solidarity with the protesters in New Delhi who have been opposing what he described as an authoritarian rule.

"On one hand, they promote 'Har Ghar Tiranga', but on the other, people waving the National Flag in public places and raising slogans such as '*Bharat Mata Ki Jai*' are being detained and arrested," Mr. Asulkar alleged.



A protest in Mumbai on Friday against the arrest of CPJ's Ashutosh Ranka and Saurav Das for waving the national flag. DHANSHU YOGNI

Manan Desai, a volunteer with the Cockroach Janta Party (CJP), questioned the SIR exercise.

"Lakhs of names are missing from the voters' list. This is not acceptable in a democracy. Right to vote is a fundamental right. You cannot deny even a single citizen this right," he said.

Referring to the reported detention of activists Ashutosh Ranka and Saurav Das in New Delhi, Mr.

Desai said: "What was their crime? They only went there and unfurled the National Flag; that's it. And they are kept in five-day judicial custody, which is completely unacceptable."

"Indian democracy is in the ICU. Everybody should come out on the streets and raise their voice to save Indian democracy and constitutional values," he said.

Amer Gadigaonkar, a Class 12 student and CJP

supporter, questioned the detention of protesters for waving the National Flag.

Mr. Gadigaonkar alleged that personnel without visible police badges had assaulted protesters in New Delhi. However, he acknowledged the cooperation extended by the Mumbai Police in facilitating Friday's demonstration.

"The Mumbai Police cooperated with us a lot," he said, appealing to Prime Minister Narendra Modi to initiate dialogue with the protesters.

Ali Bhojani, representing Hum Bharat Ke Log, criticised the restriction of demonstrations to Azad Maidan, arguing that in infrastructure development had reduced the space available for protests.

Harshada, associated with DISHA, said activists were conducting anti-SIR campaigns across States, alleging that the exercise could disenfranchise marginalised communities.

PCI issues guidelines to ensure journalists' safety during protests

The Hindu Bureau
NEW DELHI

The Press Council of India (PCI) has issued detailed guidelines to facilitate "orderly and effective coverage of protests and demonstrations" while promoting safety of media personnel, responsible reporting, and better coordination among journalists, media organisations, and law enforcement authorities.

The guidelines advise journalists to visibly display a valid press identity card issued by their media organisation, or a valid Press Information Bureau (PIB) accreditation card, or a State government Directorate of Information and Publicity accreditation card.

"When using a lanyard, ensure that it is worn and secured carefully to minimise the risk of entanglement during crowd movement or confrontations. Clearly and calmly identify

yourself as a journalist when approached by law enforcement personnel. Maintain neutrality and professionalism. Do not participate in demonstrations, take sides, provoke confrontations, or interfere with protesters, counter-protesters, or police," the guidelines said.

The PCI also advised journalists to maintain a reasonable and safe distance from confrontations, particularly when tensions escalate or police action is anticipated, and not to attach cameras or recording equipment to police barricades, vehicles, or other equipment in ways that obstruct movement or damage property.

It advised journalists to report events accurately, objectively, and impartially. "Distinguish verified facts from allegations and unconfirmed claims; follow the applicable Norms of Journalistic Conduct on Accuracy and Fairness...," said the PCI.

Concerns raised over detention and assault of journalists by police

The Hindu Bureau
NEW DELHI

More than three dozen journalists were temporarily detained and, in some cases, assaulted while covering protests against Chief Election Commissioner (CEC) Gyanesh Kumar over allegations of voter-list manipulation, in Delhi, Ahmedabad and Pune on October 10 and 11, according to the Committee to Protect Journalists (CPJ).

The non-profit organisation said that at least 39 journalists were detained in New Delhi, where the main protests broke out, over the course of two days, based on its review of news reports, direct interviews, and verified social media posts by editors, journalists and their newsmen.

"Four more journalists were detained while covering solidarity protests in other cities, including *Alt* News correspondent Kinjal in Ahmedabad and *Scroll's*



Police detain a journalist during a protest demanding the resignation of CEC Gyanesh Kumar in Delhi on October 11. REUTERS

Divya Aslesha in Pune on October 10. In Mumbai, police detained *The Quint's* Swati Chopra and Mohit Manwani at Shivaji Park on October 11, while they covered a solidarity protest," it said.

Despite SC intervention The CPJ said the police continued detaining journalists "even after Supreme Court Justices won assurances from Solicitor General Tushar Mehta on October 11 that lawyers, journalists, and other pro-

fessionals would not be impeded in their professional duties." "Authorities also seized at least five phones, pressured at least one journalist to delete footage, and drove some to holding sites up to 65 kilometres away," the report said. It said that at least five journalists were struck by the police, according to their own accounts of their outings.

On October 10, journalist Rana Ayyub posted on X that the police threatened to detain her when she

asked whether they were facilitating a man who was shouting abuses at protesters in their presence. She told CPJ that, despite knowing she was a journalist, the police "beat her with a *lathi* (baton)..."

As per the report, the Delhi Police, on October 10, temporarily detained *Scroll's* Ayush Tiwari and Shoab Daniyal; *Business Standard's* Anushka Bhardwaj; *Newslandry's* reporters Ashwine Kumar Singh, Astha Sayasachi and Anmol Pritam and intern Anshu; *Reuters's* Saurabh Sharma; *Navbharat's* Hritik Joshi and Rahul Chauras; *BOOM's* Jagriti Trishia; Shivang Shukla of *Mo, India Today's* digital video platform; *Molitics's* Amaan Rastogi; *The Quint's* Sarthak Jainwal; *Reporter TV's* Rosni Rajan and Farza T.M.; independent journalists Shrishti Khanna and Prashant Pandit; *No Noise Stories's* Vivek Gupta; and *Alt* News intern Agniva Ray. Most of them were carrying press cards, it said.

महत्वपूर्ण तथ्य



- **BNSS Section 163**
- **Contempt Of Court & Accountability**
- **Fundamental Rights vs Public Order**
- **Suspension of Internet & Essential Services – Anuradha Bhasin – 2020**
- **Article 19 (1)**
- **Article 19 (3)**
- **Article 20**
- **Article 21**
- **Article 22**
- **ECI**
- **CEC – EC's**
- **SIR**
- **RPA 1950 – 21(3)**
- **RPA 1950 – 28 (RER-1960 - 6,7,8)**
- **RPA 1951 - 29(A)**
- **Conduct of Election Rules 1961 – 4(A) – Form 26**

AI agents accessed data of Indian entities, says CERT-In

Agency says it received 'multiple voluntary disclosures from AI model providers' stating that their tools, during research and evaluation activity, had reached live systems of Indian organisations

Aroon Deep
NEW DELHI

The Computer Emergency Response Team, India (CERT-In) said on Thursday that several Indian organisations had been targeted by Artificial Intelligence agents that were undergoing testing.

AI agents – which are pieces of code that act autonomously when given certain instructions unlike a chat-response back-and-forth with a chatbot – have been taking advantage of weaknesses across Indian organisations' cloud and web assets, and were accessing information they did not need, and should not have access to, CERT-In said.

Prone to exploitation

While CERT-In's disclosure does not name any affected organisation, the revelation is nonetheless significant, as it implies that Indian firms and government organisations' cybersecurity posture are now susceptible to be exploited if any vulnerability can be inferred by an agent. In other words, what a hu-



The affected organisations could not detect the unauthorised access on their own, said CERT-In. REUTERS

man security researcher may find in a manual review of an organisation's cybersecurity posture, could now be programmatically identified and exploited by agents.

CERT-In, which operates under the Ministry of Electronics and Information Technology (MEITY) and is exempt from the Right to Information (RTI) Act, 2005, reveals little about data breach cases that are mandatory to report to the body under directions it issued in 2022. The organisation said it was sent "multiple volun-

tary disclosures from AI model providers stating that their models, during research and evaluation activity on the Internet, had reached the live systems of Indian organisations".

Model providers

CERT-In did not reveal who the model providers are. OpenAI, Anthropic and Google, which make some of the main U.S.-based AI models like ChatGPT, Claude and Gemini, have each publicly disclosed details of advanced agents running amok and hacking

public websites, like the coding repository HuggingFace.

The agents' subsequent behaviour entailed "reading business records, including personal data and confidential material, through credentials and connection settings exposed in application configuration, public code repositories and permissive cloud service roles," CERT-In said in its note.

But, CERT-In noted, many of the weaknesses these organisations had displayed were "conventional", meaning that these were known vulnerabilities for which cybersecurity professionals already carry out a hygiene check, if all goes well. "In the incidents observed, AI found and exploited these conventional weaknesses faster, more exhaustively and at greater scale than human attackers," CERT-In noted.

"The affected organisations could not detect the unauthorised access on their own," CERT-In said, noting that its own proactive hunt for such behaviour and model providers' reports are what led to this disclosure.

महत्वपूर्ण तथ्य



- **CERT-In (भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम / Indian Computer Emergency Response Team)** भारत में साइबर सुरक्षा से संबंधित घटनाओं से निपटने के लिए राष्ट्रीय स्तर की नोडल एजेंसी है।
- यह भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (**Ministry of Electronics and Information Technology - MeitY**) के अंतर्गत कार्य करती है।

स्थापना और कानूनी आधार

- **स्थापना:** CERT-In का गठन 2004 में किया गया था।
- **वैधानिक दर्जा (Statutory Status):** सूचना प्रौद्योगिकी (IT) अधिनियम, 2000 की धारा 70B के तहत इसे राष्ट्रीय स्तर पर साइबर सुरक्षा आपातकालीन प्रतिक्रिया कार्य करने के लिए अधिकृत किया गया है।

CERT-In के प्रमुख कार्य

- **साइबर घटनाओं का विश्लेषण:** भारत में होने वाले साइबर हमलों, हैकिंग, डेटा लीक और फिशिंग (Phishing) की घटनाओं की निगरानी और विश्लेषण करना।
- **पूर्व चेतावनी और अलर्ट:** साइबर सुरक्षा में पाई जाने वाली कमियों (Vulnerabilities) और नए वायरस/मालवेयर के खतरों के प्रति सरकारी व निजी संगठनों को समय पर अलर्ट और एडवाइजरी जारी करना।

- **आपातकालीन प्रतिक्रिया (Emergency Response):** किसी भी बड़े साइबर हमले की स्थिति में त्वरित बचाव सहायता प्रदान करना और प्रभावित प्रणालियों को पुनर्स्थापित करना।
- **दिशानिर्देश जारी करना:** देश में साइबर सुरक्षा के मानकों (Cyber Security Guidelines and Best Practices) को तय करना और लागू करवाना।
- **जागरूकता और प्रशिक्षण:** साइबर सुरक्षा के प्रति लोगों और संगठनों को जागरूक करना तथा तकनीकी टीमों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।

CERT-In का महत्व

- **डिजिटल बुनियादी ढांचे की सुरक्षा:** भारत में डिजिटल बैंकिंग, आधार, डिजिटल भुगतान प्रणाली (UPI), और सरकारी पोर्टलों जैसे महत्वपूर्ण सूचना बुनियादी ढांचे (Critical Information Infrastructure) को साइबर हमलों से सुरक्षित रखना।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा:** वर्तमान समय में साइबर हमले केवल वित्तीय नुकसान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभुता के लिए भी बड़ा खतरा हैं। ऐसे में CERT-In साइबर मोर्चे पर देश की पहली रक्षा पंक्ति की तरह कार्य करता है।

L&T-built *INS Samarthak* inducted into Indian Navy

Saurabh Trivedi
NEW DELHI

The Indian Navy on Friday commissioned *INS Samarthak*, the first of two multi-purpose vessels being built by Larsen & Toubro (L&T), strengthening its capability to test and evaluate indigenously developed sensors and weapons amid an evolving maritime security environment.

Vice-President C.P. Radhakrishnan presided over the commissioning ceremony in the presence of Chief of the Naval Staff Admiral Krishna Swaminathan, and senior naval and Defence officials in Karwar.

According to the Indian Navy, *INS Samarthak* marks a significant milestone in India's indigenous shipbuilding efforts, highlighting the growing role of the private sector in developing platforms for the armed forces. The vessel has over 75% indigenous



The indigenous multi-purpose vessel *INS Samarthak*. PTI

content, according to the Navy.

Conceived primarily as a versatile platform for trials and evaluation, the ship will support the testing and training of new sensors and weapons developed by domestic industry. Its induction is expected to strengthen the Navy's ability to validate indigenous technologies before wider deployment, it added.

Named *Samarthak*, meaning 'the proponent', the vessel has been de-

signed to undertake a range of operational and developmental tasks. Besides supporting trials and evaluation, it can carry out maritime surveillance and reconnaissance, offshore patrolling and disaster relief operations.

The Navy said the vessel's versatility would also be particularly useful in an unpredictable maritime environment where traditional security challenges are increasingly accompanied by non-traditional threats.

YouTube Homework

- **INS Dunagiri**
- **INS Sanshodhak**
- **INS Agray**
- **INS Mahendragiri**
- **INS Malvan**
- **INS Mangrol**

महत्वपूर्ण तथ्य



INS समर्थक (INS Samarthak)

- INS समर्थक (INS Samarthak) के बारे में मुख्य बिंदु:
- कमीशनिंग / शामिल होना:
 - भारतीय नौसेना ने शुक्रवार को कारवार में INS समर्थक को औपचारिक रूप से अपने बेड़े में शामिल किया।
 - इस कमीशनिंग समारोह की अध्यक्षता देश के उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने की, जिसमें नौसेना प्रमुख एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन और अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।
- निर्माता (Manufacturer):
 - इसे निजी क्षेत्र के प्रमुख शिपयार्ड लार्सन एंड टुब्रो (L&T) द्वारा निर्मित किया गया है। यह दो बहुउद्देश्यीय पोतों (Multi-Purpose Vessels) की श्रृंखला में पहला पोत है।
- प्रमुख विशेषता और उद्देश्य:
 - घरेलू तकनीक का परीक्षण: इसे मुख्य रूप से घरेलू रक्षा उद्योग द्वारा विकसित किए जाने वाले नए सेंसर, हथियारों और उपकरणों के परीक्षण (Trials) और मूल्यांकन (Evaluation) के लिए एक बहुमुखी मंच (Platform) के रूप में डिज़ाइन किया गया है। व्यापक स्तर पर तैनाती से पहले यह नौसेना को स्वदेशी तकनीकों को परखने में मदद करेगा।
 - स्वदेशी निर्माण: इस पोत में 75% से अधिक स्वदेशी सामग्री (Indigenous Content) का उपयोग किया गया है, जो 'आत्मनिर्भर भारत' और रक्षा क्षेत्र में निजी क्षेत्र की बढ़ती भूमिका का एक बड़ा उदाहरण है।
 - अन्य कार्य और भूमिकाएँ:
 - परीक्षण के अलावा, यह पोत समुद्री निगरानी और टोही (Surveillance and Reconnaissance), अपतटीय गश्त (Offshore Patrolling), और आपदा राहत अभियानों (Disaster Relief Operations) को भी अंजाम दे सकता है।

Reliance says it never 'feared competition'

Days after Elon Musk accused RIL's subsidiary of 'oligarchy', the firm said it sees competition as the 'truest test of who serves the customer best'

Lalatendu Mishra
Aroon Deep
MUMBAI

Reliance Industries Ltd. (RIL), whose subsidiary is Jio Platforms Ltd., has hit back at U.S. billionaire Elon Musk for his recent remarks on the company and the Indian market in connection with his satellite service Starlink. Mr. Musk had accused the telecom operator and its parent company of "oligarch[ic]" behaviour, essentially saying their pushback was what was keeping the service from obtaining approvals.

"In light of recent remarks about Reliance and the Indian market, we wish to place the facts on record," RIL said in a statement on Friday.

"Like every Indian enterprise, Reliance has grown in an India that welcomes investment and innovation, homegrown or international, that improve the lives of the people," the company said.

"That openness rests on the rule of law. As the Government of India has stated, it applies the same process to every applicant, Indian or foreign," it added. Stating that Jio's own satellite services await clearances, the company said,

"At Reliance, we have never feared competition. We see it as the truest test of who serves the customer best." The firm has strongly advocated for sa-



Like every Indian enterprise, Reliance said it has grown in an India that welcomes investment. REUTERS

telite spectrum to be auctioned like terrestrial telecom spectrum, even though this is not done in any other market in the world where Starlink currently operates.

The company's reasoning is that the 2G spectrum case in the Supreme Court ended with an order for all scarce natural resources to only be allocated through an auction. "Jio itself entered India's crowded telecom market in 2016 as the newest player, with not a single customer. In just ten years, Jio has earned the trust of over 530 million customers and given Indians some of the best digital infrastructure and most affordable data in the world," the company said.

"We welcome competition in satellite communications, including Starlink. Every player, Jio included, must serve the people of India and abide by the laws and policies of the land," it emphasised.

"We are being blocked by certain oligarchs to

maintain monopolistic chokehold on Indian people... This is a crime against India," Mr. Musk had recently stated on X.

"Is Ambani the real boss of India?" he had asked, adding Starlink was licensed in 165 countries, has 5 years compliance in India, still no final license had been granted yet.

The Indian Government reportedly responded saying the framework was "fair and non-discriminatory." It stated Starlink, Jio Satellite, Eutelsat OneWeb of Airtel have satcom license but all were awaiting final security clearance and spectrum allocation so the allegations of discrimination was baseless. While the three firms have indeed obtained a Global Mobile Personal Communications by Satellite (GMPCS) license, the Ministry of Home Affairs is yet to provide security clearance, and the DoT has also not yet finalised rules on how spectrum will be priced and assigned.

India's crude imports rise 7% in September, bill surges 47%

Saptaparno Ghosh

NEW DELHI

India's crude oil import bill surged 47% year-on-year (YoY) to \$15.4 billion in September, amid resurging conflict in West Asia, according to provisional government data.

Data from the Petroleum Planning and Analysis Cell (PPAC) showed that crude oil imports rose 7% YoY to 21.7 million metric tonnes (MMT) in September, even as shipments of liquefied natural gas (LNG) were about 8.5% lower although import bill stayed almost flat.



Petroleum product exports declined 24.2% to 4.7 MMT in September.

The increase in import costs widened India's net oil and gas import bill – calculated as imports of crude oil, petroleum pro-

ducts and gas minus exports of petroleum products – by 39.6% to \$13.4 billion during the month.

Petroleum product exports declined 24.2% to 4.7 MMT in September, while revenue accrued from the exports accelerated about 20% to \$4.8 billion, according to the data.

In contrast, LNG imports declined 8.5% to 2,957 million standard cubic metres (MMSCM) in September, from 3,233 MMSCM in the corresponding month last year. However, the LNG import bill remained almost unchanged at \$1.2 billion.

YouTube Homework

➤ LPG

सितंबर में भारत का कच्चा तेल आयात 7% बढ़ा, बिल में 47% का उछाल

- **कच्चे तेल का आयात बिल (Crude Oil Import Bill):** अनंतिम सरकारी आंकड़ों के अनुसार, पश्चिम एशिया (West Asia) में जारी संघर्ष के बीच सितंबर महीने में भारत का कच्चा तेल आयात बिल वार्षिक आधार (Year-on-Year) पर 47% बढ़कर **15.4 बिलियन डॉलर** हो गया।
- **आयात की मात्रा (Import Volume):** 'पेट्रोलियम योजना और विश्लेषण प्रकोष्ठ' (PPAC) के आंकड़ों से पता चलता है कि सितंबर में कच्चे तेल का आयात 7% बढ़कर **21.7 मिलियन मीट्रिक टन (MMT)** हो गया।
- **शुद्ध तेल और गैस आयात बिल (Net Oil and Gas Import Bill):** आयात लागत में वृद्धि के कारण भारत का शुद्ध तेल और गैस आयात बिल (कच्चे तेल, पेट्रोलियम उत्पादों और गैस के आयात में से पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात को घटाकर) 39.6% बढ़कर **13.4 बिलियन डॉलर** हो गया।
- **पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात (Petroleum Product Exports):** सितंबर में पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात 24.2% घटकर **4.7 MMT** रह गया, लेकिन इस निर्यात से प्राप्त राजस्व लगभग 20% बढ़कर **4.8 बिलियन डॉलर** हो गया।
- **एलएनजी आयात (LNG Imports):** इसके विपरीत, तरलीकृत प्राकृतिक गैस (LNG) का आयात 8.5% घटकर **2,957 मिलियन मानक घन मीटर (MMSCM)** रह गया (जो पिछले साल इसी महीने में 3,233 MMSCM था)। हालाँकि, एलएनजी आयात का बिल लगभग **1.2 बिलियन डॉलर** पर स्थिर रहा।

महत्वापूर्ण तथ्य

Tigray conflict revives fears of Ethiopia-Eritrea war

A peace deal signed in November 2022 ended two years of brutal fighting in the Ethiopian state, but disputes over political power, territory and the disarmament of armed groups remain unresolved: renewed fighting between the TPLF and govt. forces, coupled with worsening relations between Ethiopia and neighbouring Eritrea, has raised fears of another war with wider regional consequences

NEWS ANALYSIS

Sharmada
Venkatasubramanian

In November 2022, a peace agreement put an end to two years of brutal conflict in Ethiopia's Tigray region. Almost four years later, the conflict has resurfaced, with the Tigray People's Liberation Front (TPLF) having formed an alliance with other armed opposition factions, and the Ethiopian government forces managing to reclaim control of Mekelle, the capital of the region. At the same time, the conflict has raised the threat of direct military confrontation between Ethiopia and its neighbour, Eritrea.

Ethiopian forces, along with their allies, have marched into several towns in the Tigray region towards the Eritrean border. Meanwhile, reports on Eritrean forces being present in Ethiopia's territory are still under dispute, and there are no diplomatic relations left between the two countries anymore.

The reasons for this conflict go back to the political transformation in Ethiopia and the old rivalry between the regions.

For almost three decades, the TPLF dominated the ruling coalition of Ethiopia. That ended in 2018, when Abiy Ahmed became Prime Minister. He made peace with Eritrea's President, Isaias Afewerki,

closing the stand-off left by the 1998-2000 border war, and won the Nobel Peace Prize for it.

The government started centralising political powers, and at the same time, the relationship between the government and the TPLF worsened. The TPLF, with a strong influence in Tigray, perceived the government as a danger to the region's sovereignty and refused to join the coalition.

'Unconstitutional polls'
Tension between the TPLF and the government increased in 2020 as the TPLF conducted regional elections in Tigray despite the decision by the federal government to postpone national elections due to the outbreak of the coronavirus pandemic. The former claimed that the federal government deliberately postponed conducting the elections and that the pandemic was not the only reason for it.

The Tigray regional government claimed that their elections were not unconstitutional while Addis Ababa declared them illegal, further deepening the dispute.

The situation worsened in November 2020 when federal forces deployed military to fight in Tigray.

Troops from the Ethiopian government, Amhara forces, and Eritrea fought against the TPLF and its military wing, TDF, or Tigray Defence Forces.

During the war, many people were internally displaced and suffered food shortages. Cases of mass killings and rapes were also reported. Although there are many estimates, the total number of casualties are not certain. There are reports from Ghent University that the war led to about 5,00,000 deaths.

A cessation of hostilities agreement that was signed in Pretoria, South Africa, brokered by the African Union (AU) in November 2022 put an end to the large-scale violence. The agreement covered such items as disarmament, restoration of the government's control over the area, provision of humanitarian assistance, and repatriation of the displaced people.

However, Eritrea, which fought together with Ethiopia, did not sign the agreement, which later mattered a great deal.

The deal also left hard questions open like who disarms Tigrayan forces, who controls territory held by Amhara militias, and where Tigray fits in the federal system. The demobilisation and re-integration of the Tigrayan forces was among other issues that still needed addressing.

Then the TPLF began to fracture. The collapse of the peace process went hand in hand with deep divisions emerging in the TPLF ranks.

Leadership disagreements in the TPLF emerged regarding the party's relations with the federal government and the Pretoria agreement. In March 2025, Getachew Reda, who headed the transitional administration in the region, was ousted because of differences with the hardline elements in the party. By 2026, the faction led by Debretsion Gebremichael took control of the political machine in the region.



Tight watch: Ethiopian police personnel patrol in Mekelle amid rising hostilities with the TPLF on October 9, AFP

ments in the TPLF emerged regarding the party's relations with the federal government and the Pretoria agreement.

In March 2025, Getachew Reda, who headed the transitional administration in the region, was ousted because of differences with the hardline elements in the party. By 2026, the faction led by Debretsion Gebremichael took control of the political machine in the region.

However, Eritrea, which fought together with Ethiopia, did not sign the agreement, which later mattered a great deal.

The deal also left hard questions open like who disarms Tigrayan forces, who controls territory held by Amhara militias, and where Tigray fits in the federal system. The demobilisation and re-integration of the Tigrayan forces was among other issues that still needed addressing.

Then the TPLF began to fracture. The collapse of the peace process went hand in hand with deep divisions emerging in the TPLF ranks.

Leadership disagreements in the TPLF emerged regarding the party's relations with the federal government and the Pretoria agreement. In March 2025, Getachew Reda, who headed the transitional administration in the region, was ousted because of differences with the hardline elements in the party. By 2026, the faction led by Debretsion Gebremichael took control of the political machine in the region.

Tigray, Amhara and Afar. The rebels took Mekelle, the Tigrayan capital, and its airport. They did not hold it long. The army leaned on drones and airpower, and a pro-government Tigrayan militia, the Tigray Peace Force, fought alongside it. The rebels announced their withdrawal from Mekelle on October 3, and government-allied forces moved in. The TPLF said its regional government would operate from somewhere else.

While the takeover of Mekelle has put the federal forces in charge of Tigray's regional capital city, it is far from the end of the insurgency.

After entering Mekelle, government-backed forces moved north along main roads toward the Eritrean border in early October.

In accordance with a Reuters report on October 13, the Ethiopian forces have since moved further to a border town, which

was under the control of the TDF before.

The conflict has spilled beyond Tigray. The Amhara insurgency has impacted the transportation routes of the federal forces, while the fighting in Afar poses a threat to the corridor connecting Addis Ababa and Djibouti. This corridor serves the vast majority of Ethiopia's maritime trade.

Complicated battlefield
The situation on the battlefield is, therefore, much more complicated than the simple winning of the government. The control of big cities provides the government with an advantage, but does not mean that the TPLF was defeated and that the government can restore order in the region.

With regard to the human cost, although most of the evidence is still thin because of communication disruption, Human Rights Watch says it has received reports of civilians killed and wounded by shelling in southern Tigray, and that some health facilities had to shut.

One of the most dangerous consequences of the renewed conflict in Tigray may be the direct war between Ethiopia and Eritrea.

These two countries have a history of bad relations. From 1998 to 2000, they were engaged in a border war, and their relationship did not improve for many years afterward.

During the 2020-2022 war in Tigray, Eritrean troops were fighting along with the troops of the Ethiopian federal government against the TPLF. However, their relations deteriorated due to Eritrea's exclusion from the Pretoria negotiations.

On October 9, Ethiopia informed the UN Security Council about the intrusion of Eritrean troops into its territory up to 60 km deep into Tigray and invoked Article 51 of the UN Charter. Eritrea, however, denies invading Ethiopia.

Its Foreign Minister, Osman Saleh, wrote to the council that Ethiopia had made a "deplorable declaration of war" and he called upon the Security Council to take action against Ethiopia.

According to Eritrea, Ethiopia's desire for access to the Red Sea poses a threat to the sovereignty of Eritrea.

The deterioration of relations is evident from the fact that the Ethiopian government shut down its mission in Asmara, while Eritrea ended its diplomatic ties with Ethiopia. Both parties gave contradictory statements at the UN.

Ethiopia lost its coastline when Eritrea became independent in 1993 and now relies on Djibouti for most of its sea trade. After being sworn in for a new five-year term on October 5, Mr. Abiy told Parliament that Ethiopia's modernisation cannot be realised

without sea access.

Ethiopian officials say they want it through dialogue. Ethiopia has pointed out the country's historical links with the sea, but the Ethiopian government states that they seek access through peaceful means.

In January 2024, Ethiopia signed a memorandum with Somaliland that offered a naval base in return for possible recognition, which angered Somalia.

Eritrea fears that the real target is its port of Assab.

The immediate question is whether the Ethiopian Army will be able to solidify their territorial gains without risking a full-scale military confrontation with Eritrea. The remaining military capabilities of the TPLF, the stance of the Eritrean forces along the border, and the cohesion of the opposition alliance will define the future course of the conflict.

UN Secretary-General António Guterres has appealed to both sides to stop hostilities and resume negotiations in accordance with the Pretoria agreement.

However, a sustainable settlement would be more complex than just stopping hostilities. It would have to discuss the political standing of Tigray, contested territories, disarmament, displaced people, and accountability of the violations. Moreover, Ethiopia and Eritrea would have to resolve their security issues without violence.



महत्वपूर्ण तथ्य



- **टिग्रे संघर्ष (Tigray Conflict)** पूर्वी अफ्रीका के देश **इथियोपिया (Ethiopia)** के उत्तर में स्थित **टिग्रे क्षेत्र (Tigray Region)** में हुआ एक भीषण सशस्त्र संघर्ष (Armed Conflict) था।
- यह संघर्ष मुख्य रूप से **इथियोपिया की केंद्रीय सरकार** (प्रधानमंत्री अबी अहमद के नेतृत्व में) और **टिग्रे पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट (TPLF)** के बीच लड़ा गया।

1. संघर्ष की पृष्ठभूमि (Causes & Background)

- **TPLF का वर्चस्व:** इथियोपिया में 1991 से 2018 तक 'टिग्रे पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट' (TPLF) का राजनीति और सेना में वर्चस्व था।
- **अबी अहमद का आगमन (2018):** 2018 में अबी अहमद (Abiy Ahmed) इथियोपिया के प्रधानमंत्री बने। उन्होंने देश में राजनीतिक सुधार शुरू किए और विभिन्न जातीय गुटों को मिलाकर एक नई पार्टी ('प्रोस्पेरिटी पार्टी') बनाई। TPLF ने इस नई व्यवस्था को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, जिससे केंद्र और टिग्रे क्षेत्रीय सरकार के बीच तनाव बढ़ता गया।
- **2020 के चुनाव का विवाद:** 2020 में कोरोना महामारी के कारण केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय चुनावों को स्थगित कर दिया। लेकिन TPLF ने केंद्र के आदेश को दरकिनार कर सितंबर 2020 में टिग्रे क्षेत्र में अपने चुनाव करवा लिए। केंद्र सरकार ने इन चुनावों को अवैध घोषित कर दिया।

2. संघर्ष की शुरुआत और मुख्य घटनाएं

- **नवंबर 2020 में युद्ध की शुरुआत:** 4 नवंबर 2020 को TPLF पर इथियोपियाई सेना के उत्तरी सैन्य बेस (Northern Command Base) पर हमला करने का आरोप लगा। इसके जवाब में प्रधानमंत्री अबी अहमद ने टिग्रे में सैन्य अभियान शुरू कर दिया।
- **पड़ोसी देशों और समूहों का शामिल होना:** इस युद्ध में इथियोपियाई सेना के साथ पड़ोसी देश **इरिट्रिया (Eritria)** की सेना और **अमहारा (Amhara)** क्षेत्र के सशस्त्र बलों ने भी भाग लिया।
- **मानवीय संकट (Humanitarian Crisis):** इस युद्ध के कारण बड़े पैमाने पर मानवाधिकारों का उल्लंघन हुआ, भुखमरी की स्थिति पैदा हुई और लाखों लोग विस्थापित होकर पड़ोसी देश सूडान भागने पर मजबूर हुए।

3. शांति समझौता (Peace Agreement)

- **प्रिटोरिया समझौता (Pretoria Agreement):** अफ्रीकी संघ (African Union) की मध्यस्थता में नवंबर 2022 में दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया में दोनों पक्षों के बीच एक ऐतिहासिक शांति समझौता (Cessation of Hostilities Agreement) हुआ।
- इसके तहत TPLF ने अपने हथियार डालने और केंद्र सरकार के अधिकार को स्वीकार करने पर सहमति जताई, जबकि केंद्र सरकार ने सेवाओं को बहाल करने और मानवीय सहायता पहुंचाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

YouTube Homework

➤ Five Lakes

U.S. trying to break Canada to 'own us', says PM Carney

Associated Press

CALGARY

Canadian Prime Minister Mark Carney warned on Thursday that the United States is trying to break Canada so it can "own us" as he urged oil-rich Alberta not to begin a process toward separation in Monday's referendum.

The vote is not a direct referendum on independence. Alberta, which has the world's fourth-largest proven oil reserves, will decide whether to remain a province or instruct the government to begin the legal process toward a future referendum on separation.

"This referendum comes at the worst possible time," Mr. Carney told a large pro-Canada rally in Calgary. "The world has become more dangerous and divided. Some outside our borders are working to break us so they can own us."

He did not directly mention the U.S. or its Presi-



Mark Carney speaks at the Forever Canadian rally at the BMO Centre in Calgary, Alberta, on Thursday. REUTERS

dent Donald Trump in that passage, but has done so in similar past speeches. Mr. Carney's warning came as U.S. President Donald Trump wages a trade war with Canada and after his repeated threats to make Canada the 51st U.S. state. Mr. Carney has argued that Canada needs to become more economically resilient and less dependent on the United States.

Mr. Carney urged Albertans not to use the vote simply to send Ottawa a message, saying a decisive result could settle the sepa-

ration question.

"Don't be fooled by the idea you can 'send a message' with your vote," Mr. Carney said. "This is not poker. A vote against Canada is a dangerous bluff that will lead to years of deep division and great uncertainty."

Mr. Carney, who grew up in Alberta, spent Thursday campaigning in Calgary before addressing the Forever Canadian rally at the BMO Centre.

Advance voting runs through Saturday, with the final vote on Monday.

महत्वपूर्ण तथ्य



- Alberta Click to open side panel for more information कनाडा का एक प्रमुख और समृद्ध प्रांत (Province) है, जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य, तेल और गैस संसाधनों तथा अर्थव्यवस्था के लिए दुनिया भर में जाना जाता है।

1. भौगोलिक स्थिति और लोकेशन (Location):

- **महाद्वीप और देश:** यह उत्तर अमेरिका महाद्वीप में कनाडा देश के पश्चिमी भाग में स्थित है।
- **सीमाएँ (Boundaries):**
 - इसके पश्चिम में ब्रिटिश कोलंबिया (British Columbia) प्रांत है।
 - पूर्व में सस्केचेवान (Saskatchewan) प्रांत है।
 - उत्तर में नॉर्थवेस्ट टेरिटरीज (Northwest Territories) और दक्षिण में अमेरिका का मोंटाना (Montana) राज्य स्थित है।
- **राजधानी और प्रमुख शहर:**
 - अल्बर्टा की राजधानी एडमॉन्टन (Edmonton) है।
 - इसका सबसे बड़ा और प्रसिद्ध शहर कैलगरी (Calgary) है, जो व्यापार और पर्यटन का बड़ा केंद्र है।

अल्बर्टा की मुख्य विशेषताएँ:

- **रॉकी पर्वत और प्राकृतिक सुंदरता (Rocky Mountains):** अल्बर्टा अपने खूबसूरत पहाड़ों, झीलों और राष्ट्रीय उद्यानों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के बैनफ नेशनल पार्क (Banff National Park) और जैस्पर नेशनल पार्क (Jasper National Park) दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
- **आर्थिक ताकत (Oil & Gas):** यह कनाडा का ऊर्जा का मुख्य केंद्र है। अल्बर्टा के पास दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडारों में से एक 'ऑयल सैंड्स' (Oil Sands) मौजूद हैं, जिसके कारण इसे कनाडा की ऊर्जा राजधानी भी कहा जाता है।
- **कृषि (Agriculture):** तेल के अलावा, यह प्रांत उच्च गुणवत्ता वाले गेहूं, कैनोला और पशुपालन (Cattle Ranching) के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है।
- **सांस्कृतिक पहचान:** यह क्षेत्र अपनी पारंपरिक "काउबॉय" संस्कृति और प्रसिद्ध कैलगरी स्टाम्पीड (Calgary Stampede) उत्सव के लिए जाना जाता है, जिसे "धरती का सबसे महान आउटडोर शो" कहा जाता है।

Iran denies nuclear ambitions

Agence France-Presse

TBILISI

Iranian President Masoud Pezeshkian denied on Friday that Tehran sought nuclear weapons, expressed readiness for dialogue and condemned U.S. sanctions during talks with Georgia's

Prime Minister.

In his meeting with Georgian premier Irakli Kobakhidze, Mr. Pezeshkian also called for closer ties with Georgia, weeks after Tbilisi cut aviation links between the two countries following U.S. sanctions targeting Iranian airlines.

The two met on the sidelines of a UN biodiversity summit in Armenia's capital Yerevan.

"Iran is not seeking nuclear weapons, and we consider the malicious propaganda against our country to be lies," Mr. Pezeshkian said.

महत्वपूर्ण तथ्य



- **ईरान का परमाणु कार्यक्रम (Iran Nuclear Program)**
- **शुरुआत कब हुई?:** ईरान का परमाणु कार्यक्रम **1950 के दशक के अंत (1957-58 के आसपास)** अमेरिका के "एटम्स फॉर पीस" (Atoms for Peace) कार्यक्रम के तहत शुरू हुआ था। इसके बाद 1974 में शाह (महमूद रजा पहलवी) के शासनकाल में 'Atomic Energy Organization of Iran (AEOI)' की स्थापना के साथ इसे व्यापक रूप से आगे बढ़ाया गया। 1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद इसमें कुछ समय के लिए रुकावट आई थी, जिसे बाद में 1980 और 90 के दशक में फिर से शुरू किया गया।

ईरान के प्रमुख परमाणु और अनुसंधान केंद्र (Major Nuclear Plants & Facilities):

- **बुशहर परमाणु ऊर्जा संयंत्र (Bushehr Nuclear Power Plant):**
 - यह ईरान का सबसे प्रमुख और पहला चालू (Operational) न्यूक्लियर पावर प्लांट है, जिसे रूस की मदद से बनाया गया है।
- **नतांज संवर्धन संयंत्र (Natanz Enrichment Facility):**
 - यह ईरान का सबसे बड़ा यूरेनियम संवर्धन (Uranium Enrichment) केंद्र है, जो मुख्य रूप से भूमिगत (Underground) स्थित है।

- **फोर्डो संयंत्र (Fordow Fuel Enrichment Plant):**
- यह क्रोम शहर के पास पहाड़ों के अंदर बहुत गहराई में बनाया गया एक गुप्त और अत्यधिक सुरक्षित यूरेनियम संवर्धन केंद्र है।
- **अराक भारी पानी संयंत्र और रिएक्टर (Arak Heavy Water Plant & Reactor):**
- यह स्थल भारी पानी के उत्पादन और एक भारी पानी अनुसंधान रिएक्टर (IR-40) से जुड़ा हुआ है।
- **तेहरान अनुसंधान केंद्र (Tehran Research Center):**
- यहाँ अमेरिका द्वारा दिया गया 5-मेगावाट का रिसर्च रिएक्टर स्थित है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से चिकित्सा और अनुसंधान कार्यों के लिए किया जाता है।
- **इस्फहान परमाणु प्रौद्योगिकी केंद्र (Isfahan Nuclear Technology Center):**
- यह यूरेनियम रूपांतरण (Uranium Conversion) और ईंधन निर्माण से जुड़ा मुख्य केंद्र है।

EU rallies around Zelenskyy as Trump slams Ukraine strikes

Reuters

BRUSSELS/KYIV

European Union leaders rallied around President Volodymyr Zelenskyy at a summit on Friday as U.S. President Donald Trump fired another salvo at Ukraine, calling its strikes on Russian refineries a “disgrace”.

The EU is hosting Mr. Zelenskyy in Brussels at one of the most difficult moments for Ukraine, with missiles and drones raining down on Ukrainian cities and fears that the U.S. could pull back intelligence sharing and weapons support from Kyiv.

Mr. Trump blindsided Mr. Zelenskyy last weekend by announcing that Ukraine and Russia had agreed not to target each

other's energy facilities.

Facing U.S. midterm elections in November, Mr. Trump has blamed Ukrainian strikes on Russian refineries for pushing up energy prices that could cost him at the ballot box.

The U.S. has also struck a diesel deal with Russia, angering Ukraine and European allies.

“We want to end this war as quick as possible. We don't now see signals from the Russian side that they are ready for this, to end this war. That's why we have to prepare for the winter,” Mr. Zelenskyy said as he arrived at the summit, hugging many of the leaders as he met them.

“The winter package is not only energy, it's also air defence and funding,” Mr. Zelenskyy said.



Volodymyr Zelenskyy sits at a round table as part of a European Union summit at the EU headquarters in Brussels on Friday. AFP

In the latest attacks, Russian drone strikes on the city of Kharkiv killed three people, while strikes elsewhere left hundreds of thousands of people without power.

In an interview, Estonian Prime Minister Kristen Michal told *Reuters* that the EU would probably have to provide a new loan

to Ukraine to help cover its budget gap for next year.

The budget gap

Ukraine struck a Russian oil refinery after Mr. Zelenskyy declared that Kyiv was abandoning the energy ceasefire that Mr. Trump had announced.

“All he's doing is making the world oil price higher.

Well, I think that's a disgrace,” Mr. Trump said in an interview with the *Newsmax* news outlet.

While EU leaders hit out at the U.S. deal to buy Russian diesel, they are also grappling with how to tackle energy prices that have soared since the Iran war, exposing divisions between member states on day one of the summit on Thursday.

Mr. Zelenskyy told *Reuters* earlier this month that Ukraine had agreed a plan with European partners that would allow it to close a \$27 billion deficit in its military spending for this year, allowing it to order the drones needed to continue fighting at the start of 2027. However, Finance Minister Sergii Marchenko said recently Ukraine still

faced an unfunded budget gap for next year of \$32.6 billion – and that does not include an estimated \$40 billion in direct military supplies from allies.

“I am unhappy with the number of countries that have been willing to pledge new financial support to Ukraine,” said Dutch Prime Minister Rob Jetten.

Sounding a more sceptical note, Austrian Chancellor Christian Stocker urged caution in the debate over making new, far-reaching financial commitments to Ukraine.

“There are so many figures being bandied about that we now need to put them into context, explain them and make it clear where this shortfall is coming from. I'm surprised too,” he said.

महत्वपूर्ण तथ्य



- **यूरोपीय संघ (EU) का समर्थन:** ब्रसेल्स में आयोजित एक शिखर सम्मेलन में यूरोपीय संघ के नेताओं ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेन्स्की का खुलकर समर्थन किया और उनके साथ एकजुटता जताई।
- **डोनाल्ड ट्रम्प की आलोचना:** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने रूसी तेल रिफाइनरियों पर यूक्रेन के हमलों को "शर्मनाक" (Disgrace) बताते हुए आलोचना की और आरोप लगाया कि इन हमलों के कारण वैश्विक स्तर पर ऊर्जा की कीमतें बढ़ रही हैं।
- **ज़ेलेन्स्की का बयान:** राष्ट्रपति ज़ेलेन्स्की ने सम्मेलन में कहा कि यूक्रेन इस युद्ध को जल्द से जल्द खत्म करना चाहता है, लेकिन रूस की तरफ से ऐसा कोई संकेत नहीं मिल रहा है। उन्होंने आने वाले सर्दियों के मौसम के लिए ऊर्जा बुनियादी ढांचे की सुरक्षा, एयर डिफेंस सिस्टम और वित्तीय सहायता को सबसे जरूरी बताया।
- **बजट घाटा और वित्तीय संकट:** यूक्रेन को अगले साल के लिए लगभग **32.6 बिलियन डॉलर** के बजट घाटे का सामना करना पड़ रहा है (जिसमें सहयोगियों से मिलने वाली \$40 बिलियन की सैन्य मदद शामिल नहीं है)। इस घाटे को पूरा करने के लिए यूरोपीय संघ के देश यूक्रेन को नए ऋण और वित्तीय पैकेज देने पर चर्चा कर रहे हैं।

Saudi-led coalition says it intercepts missiles and drones over Riyadh

Coalition forces say they intercepted three drones near Riyadh and southern areas, two cruise missiles over the Red Sea, and a ballistic missile over Yanbu; Iran rejects Saudi Arabia's accusations of supporting Houthi attacks, offers to mediate

Agence France-Presse
RIYADH

The Saudi-led coalition fighting Yemen's Houthis (Ansar Allah) said on Friday that it intercepted missiles and drones over Riyadh and other areas, as the kingdom comes under sustained attack from its Iran-backed foes.

Since Yemen's civil war flared back to life in July, the Houthis have repeatedly struck Saudi targets including Red Sea tankers, oil facilities and Riyadh's international airport, where 13 people were killed in a single attack last week.

Saudi Arabia leads a military coalition that has supported Yemen's internationally recognised government against the Houthis for more than a decade.

"We intercepted and destroyed three drones in the southern area and Riyadh... and two cruise missiles over the Red Sea," coalition spokesperson Turki al-Malki wrote on X.

He added that "in the past hours, we intercepted and destroyed a ballistic missile over Yanbu", a city home to the terminus of a major oil pipeline on the Red Sea coast.

The pressure on Saudi Arabia, the world's largest



Fighters of the Yemeni government-allied Southern Giants Brigades firing a weapon during clashes with the Houthis in Dhobab. AP

oil exporter, comes as global energy markets were already rattled by Iran's closure of the Strait of Hormuz at the outset of the wider West Asia war in Fe-

bruary this year.

Separately, the UN Security Council on Thursday "condemned in the strongest terms continued and escalatory Houthi at-

tacks against the Kingdom of Saudi Arabia", as well as their "attacks and threats against commercial shipping in the Red Sea and Bab el-Mandeb" Strait, the southern gateway to the Suez Canal.

Meanwhile, Iran's Foreign Ministry on Friday rejected Saudi Arabia's accusation that Tehran was involved in Houthi attacks on the kingdom, offering to mediate between the two sides.

"The Islamic Republic of Iran rejects any claim that Iran has played a role in Yemeni (Houthi) operations," Foreign Ministry spokesperson Esmail Baqaei said in a statement.



कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय

हिमाचल के धर्मशाला में ई-गवर्नेंस सुधारों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री, डीएआरपीजी के सचिव एवं हिमाचल प्रदेश के मुख्य सचिव ने उद्घाटन सत्र को संबोधित किया

पहले दिन की प्रमुख बातें डिजिटल नवाचार, उभरती प्रौद्योगिकियां और नागरिक-केंद्रित शासन

प्रविष्टि तिथि: 16 OCT 2026 6:28PM by PIB Delhi

ई-गवर्नेंस सुधारों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आज हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में शुरू हुआ। इसमें केंद्र सरकार, राज्य/केंद्र शासित प्रदेश सरकारों के प्रतिनिधियों और इलेक्ट्रॉनिक प्रशासन विशेषज्ञों ने भाग लिया, ताकि डिजिटल परिवर्तन, नवोन्मेषी शासन प्रथाओं और प्रौद्योगिकी-सक्षम जन सेवा वितरण पर विचार-विमर्श किया जा सके। यह सम्मेलन केंद्र और हिमाचल प्रदेश सरकार के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है।

उद्घाटन सत्र में भारत सरकार के प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग (डीएआरपीजी) की सचिव सुश्री निवेदिता शुक्ला वर्मा ने स्वागत भाषण दिया। इसके बाद हिमाचल प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव श्री कमलेश कुमार पंत और हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने अपना संबोधन दिया।

Home Assignment



- ☐ International Youth Day
- ☐ PM – Surya Sarovar Scheme
- ☐ Wetlands in India

Thanks For Watching

Follow us for more Updates



@RRESULTMITRAOFFICIAL



Join our Telegram



@SUNILVERMA_THEIASMENTOR



Follow on Instagram



Subscribe Now

Stay Connected

Learn
Share
Grow
Together ♥

Better
Students
Brighter
Tomorrow

DISCIPLINE
CONSISTENCY
SUCCESS

Small
Steps
Big
Results
😊